Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 06, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.06.01.46
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

पुराणों में वर्णित सूर्य–प्रासाद लक्षण और भारत के प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार तिवारी

(विषय विशेषज्ञ)
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनउ विश्वविद्यालय, लखनउ
E-mail : dktiwari143lko@gmail.com

मन्दिरों को मनुष्य का प्रतिरूप मानते हुए उसके शरीर के विभिन्न अंगों के नाम के अनुरूप ही, शिखा से लेकर पाद तक, मन्दिर के अंगों का नामकरण किया जाता है। भारत में प्राचीन काल से वर्तमान तक निरंतर मन्दिर बनवाने की परम्परा प्रचलन में रही, जिनमें लगभग सभी प्रमुख देवताओं (विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य आदि) के सम्मान में बनवाए हुए मन्दिर आज भी भारत के सभी दिशाओं से प्राप्त होते हैं। हिन्दू धर्म में मन्दिरों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मन्दिर आम–जनमानस की आस्था के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। हिन्दू मन्दिरों को प्रतीक अथवा प्रतीकों का समन्वय माना गया है। प्राचीन भारत में अन्य देवी–देवताओं की भांति भगवान सूर्य के मन्दिरों का निर्माण भी विभिन्न राजवंशों द्वारा अनवरत् करवाया जाता रहा। भारत के विभिन्न दिशाओं से इन मन्दिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं। इन प्राचीन सूर्य मन्दिरों में उड़ीसा स्थित कोणार्क का सूर्य–मन्दिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है, जो आज भग्नावस्था में भी अपनी भव्यता से आम जन–मानस को चमत्कृत कर देता है। वैदिक समाज में सूर्य और उनके रूपों की महत्ता स्थापित हो चुकी थी, किन्तु वैदिक धर्म में मन्दिरों का कोई स्थान नही था। भविष्य, साम्ब तथा बाद के अन्य पुराणों में मूलस्थान (मुल्तान) के सूर्य मन्दिर का उल्लेख मिलता है, जिसमें ईरान के सूर्य–अग्नि पूजक मगों की विशेष भूमिका थी।[1] गया जिले के गोविन्दपुर के (शक संवत् 1059) अभिलेख में भी साम्ब द्वारा मगों को देश में लाए जाने का वर्णन है। यह मग प्राचीन ईरान के सूर्य उपासक 'मगि' थे। इस तथ्य से परिचित अल्बेरूनी ने भी लिखा है कि–''प्राचीन ईरानी पुरोहित भारत आए और वे यहां मग नाम से जाने गए।''[2] इससे स्पष्ट होता है कि सूर्य मन्दिरों के विकास में विदेशी प्रभाव की प्रमूख भूमिका थी।

भारत में सूर्य मन्दिरों के निर्माण का निर्विवाद प्रमाण गुप्तकाल से मिलने लगता है। इन मन्दिरों का निर्माण विदेशी प्रभाव परिणाम स्वरूप ही हुआ ज्ञात होता है।[3] गुप्तकालीन शासक कुमारगुप्त प्रथम और बन्धुवर्मन के मन्दसौर शिलालेख में दशपुर के जुलाहों की एक श्रेणी द्वारा सूर्य मन्दिर निर्मित किए जाने का उल्लेख है। स्कन्दगुप्त काल के इन्दौर ताम्रपत्र अभिलेख से विदित होता है कि इन्द्रपुर

Received: 10.02.2023 **Accepted:** 16.03.2023 **Published**: 16.03.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 06, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.06.01.46
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

(बुलन्दशहर, उ.प्र.) में एक सूर्य मन्दिर था। हूण शासक मिहिरकुल के ग्वालियर शिलालेख में गोप (ग्वालियर) पहाड़ी पर मातृचेट द्वारा निर्मित किए गए एक अन्य सूर्य मन्दिर का उल्लेख हुआ है। मगध के उत्तरगुप्त शासक जीवितगुप्त द्वितीय के समय के देववर्णाक अभिलेख से भी आरा (बिहार) से पचासी मील दक्षिण–पश्चिम में एक सूर्य मन्दिर के होने की सूचना मिलती है।[4] राष्टकूट शासक गोविन्द के काम्बे लेख में कालप्रियनाथ का सन्दर्भ आया है, जो सम्भवतः कालपी (जालौन,उ.प्र.) के प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर को ही इंगित करता है। कायरा प्लेटों (684 ई.) में भारद्वाज गोत्रीय आदित्य रवि को सूर्य मन्दिर के निमित्त दान दिए जाने का उल्लेख है तथा संखेड़ा प्लेट (642 ई.) सूर्य के निमित्त, भारद्वाज गोत्रीय एवं वाजसनेयी मध्यान्दिन शाखा के सूर्य नामक ब्राम्हण को दान दिए जाने का उल्लेख करती है।[5] इनके अतिरिक्त समस्त मध्ययुगीन भारत में अनेक सूर्य मन्दिरों का निर्माण हुआ।

भविष्यपुराण चार मुख्य पर्वों ब्राम्ह, मध्यम, प्रतिसर्ग और उत्तर में विभाजित है। इसके ब्राम्ह पर्व (अध्याय–130) में सूर्य–प्रासाद(मन्दिर) लक्षण(स्वरूप) का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें नारद जी साम्ब को बताते हैं कि –''वर्षा ऋतु के प्रारम्भ और समाप्ति के पश्चात भी जो स्थान जल से परिपूर्ण रहता हो उसी जलाशय के तट पर स्थित देव मन्दिर में यश और धर्म की वृद्धि हेत[6] देवताओं का निवास होता है।''[7] चौसठ पग (पैर) का लम्बा विशाल प्रासाद जिसके मध्य भाग में चौकोर दरवाजा स्थित हो, सूर्य के लिए उत्तम माना जाता है।[8] प्रासाद(मन्दिर) की उंचाई विस्तार से दो गुनी और तिहाई भाग के समान उंचाई वाला उसका कटि (मध्य) भाग होना चाहिए।[9] विस्तार के पहले आधे भाग में मन्दिर का गर्भगृह और दूसरे भाग में चारों ओर की दीवाल होनी चाहिए। गर्भगृह के चौथाई भाग के बराबर की उंचाई अथवा उसके दूने उंचाई का दरवाजा होना चाहिए।[10] सूर्य के लिए बीस प्रकार के भवन बनाए जाने का उल्लेख है।[11] इनमें मेरु, कैलाश, विमान, समुद्र, पद्म, गरुड़, नन्दिवर्द्धन, कुंजर, वृष, हंस, सर्वतोभद्र, घट, सिंह, चतुष्कोण, मन्दर और नन्दन प्रकार प्रमुख हैं।[12] इन प्रासाद प्रकारों में गृहराज और सर्वतोभद्र प्रकार सूर्य के लिए सर्वोत्तम माने जाते हैं।[13] गृहराज नामक प्रासाद सोलह हांथ लम्बा और चन्द्रशालाओं से युक्त होता है।[14] जबकि सर्वतोभद्र नामक प्रासाद चार दरवाजे, अनेक शिखरों एवं रुचिर चन्द्रशालाओं से पूर्ण और छब्बीस हांथ की लम्बाई युक्त होता है।[15] सूर्य मन्दिर निर्माण के पूर्व नगर के मध्य भाग या दिशा के पूर्व भाग में अथवा पूरब वाले दरवाजे के समीप वाली भूमि का परीक्षण करना चाहिए।[16] जिस प्रकार मेघ और नगाड़े की भांति शब्द सुनाई पड़ने वाली, जहां सभी प्रकार के बीज अंकुरित हो सकें और सुगन्ध रस से युक्त भूमि मन्दिर हेतु प्रशस्त मानी जाती है। इसी प्रकार रेह, तुष (भूसी), केश, अस्थि,

Received: 10.02.2023 **Accepted:** 16.03.2023 **Published**: 16.03.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.06.01.46
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

खार, कोयले वाली भूमि अप्रशस्त मानी जाती है।[17] सूर्य मन्दिर निर्माण हेतु शुक्ल, रक्त, पीत और काली भूमि क्रमशः ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए उत्तम मानी गई है।[18] प्रासाद(मन्दिर) का दरवाजा पूर्वाभिमुख होना चाहिए, परन्तु किसी कारणवश यदि ऐसा सम्भव न हो तो पश्चिमाभिमुख भी कर लेना चाहिए किन्तु प्रयत्न पूरब दिशा की ओर ही होना चाहिए।[19] सूर्य प्रासाद के दाहिने पार्श्व में स्नानगृह और उत्तर की तरफ अग्निहोत्र गृह का निर्माण होना चाहिए।[20] सूर्य के पश्चिम की तरफ ब्रम्हाा और उत्तर की तरफ विष्णु की स्थापना करनी चाहिए।[21] सूर्य के दाहिने पार्श्व में निम्ब (निक्षु) और बाएं पार्श्व राज्ञी को स्थापित करना चाहिए। उसी प्रकार दाएं–बाएं पार्श्व मे क्रमशः पिंगल और दण्ड की भी स्थापना होनी चाहिए। सूर्य के सम्मुख श्रीमहाश्वेता को स्थापित करना चाहिए।[22] प्रासाद के बाहर अश्विनी कुमार, दूसरी कक्षा में राजा स्रौव और तीसरी कक्षा में कल्मास तथा पक्षी की स्थिति होनी चाहिए।[23] दक्षिण दिशा में जड़ (जानु) एवं कामचर और उत्तर की तरफ कुबेर, पुनः उसके उत्तर में विनायक सहित रैवत को स्थापित करना चाहिए।[24] इसके पश्चात किसी भी दिशा में जहां स्थान दिखाई पड़े स्कन्द (गुह) सहित अन्य देवताओं को स्थापित करना चाहिए। इसी प्रकार दक्षिण और उत्तर दिशा में (दाएं–बाएं पार्श्व में) अर्ध्य हेतु दो मंडल भी बनाने चाहिए।[25] मन्दिर के भीतर सूर्य की चक्राकार प्रतिमा चार शुभ कलशों के साथ किसी पीठ स्थापित करना चाहिए।[26] सूर्य–प्रासाद के अग्रभाग में चार शिखर एवं चौकोर व्योम और उसके मध्य भाग में सूत्र द्वारा उनका मंडल बनाना चाहिए।[27] तत्पश्चात आदित्य के सामने दिंडी की स्थापना करनी चाहिए। इसे ही सर्वदेवमय व्योम कहा जाता है।[28] यहीं पर जो स्थान रुचिकर हो, वहां कथावाचक का भी स्थान बनाना चाहिए।[29] उपर्युक्त प्रकार से उत्तम स्थान का चयन करके जो व्यक्ति सूर्य हेतु प्रासाद (मन्दिर) का निर्माण करता है उसे निःसंदेह सूर्यलोक की प्राप्ति होती है।[30] उपर्युक्त संदर्भों से यह स्पष्ट होता है कि सूर्य मन्दिर निर्माण हेतु स्थान परीक्षण के साथ–साथ उपयुक्त दिशाओं का चयन भी अत्यन्त आवश्यक था।

भविष्य, साम्ब और स्कन्द आदि पुराणों में जिन तीन प्रमुख मन्दिरों का उल्लेख किया गया है, उनमें से एक कोणार्क का मन्दिर भी है। इस मन्दिर के भग्नावशेष अपनी खण्डित अवस्था में भी भव्यता लिए हुए पुरी से लग. 20 कि.मी. उत्तर–पूर्व में समुद्र के किनारे स्थित हैं। पौराणिक साहित्य में इस स्थल को सुतीर, उदयाचल, सूर्यकानन, रविक्षेत्र, मित्रवन, सूर्यक्षेत्र, अर्कक्षेत्र, आदि नाम दिए गए हैं।[31] ब्रम्हपुराण में इसे स्पष्ट रूप से ओड देश (उत्कल) में में स्थित कोणादित्य या कोणार्क कहते हुए इसके महात्म्य का वर्णन किया गया है।[32] इस सम्बन्ध में उमियाशंकर व्यास का भी मानना है कि 'पुराणों में वर्णित अर्कक्षेत्र

Received: 10.02.2023 **Accepted:** 16.03.2023 **Published**: 16.03.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 06, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.06.01.46
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

अथवा पद्मक्षेत्र ही कोणार्क है। उसके दक्षिण में एक–दो मील पर ही बंगाल की खाड़ी है उत्तर में लगभग आधे मील पर चन्द्रभागा नदी बहती है। कोणार्क मन्दिर जहां स्थित है, वहां अब कोणार्क नगर बस गया है, जो पुरी से 30 मील दूर स्थित है।'[33] कोणार्क के वैभव सम्पन्न सूर्य मन्दिर का निर्माण मध्य तेरहवीं शताब्दी में गंग वंश के शासक नरसिंहदेव प्रथम (1238–1264 ई.) ने करवाया था।[34] किंवदन्तियों के अनुसार 'उसने इस मन्दिर का निर्माण कुष्ठ रोग से मुक्त होने के लिए करवाया था।' कुछ लोगों का यह भी मानना है कि इस मन्दिर का निर्माण नरसिंहदेव ने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में करवाया था। कोणार्क का सूर्य मन्दिर उड़ीसा में विकसित नागर शैली का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।[35] इसका निर्माण 865 फीट लम्बे और 540 फीट चौड़े विशाल प्रांगण में किया गया था। प्रांगण के चारों तरफ लगभग 11 फीट उंची और 4 फीट चौड़ी दीवाल थी। इसमें प्रवेश के लिए पूरब, उत्तर और दक्षिण दिशाओं में द्वार बनाए गए थे, मुख्य द्वार पूरब की ओर था। मुख्य मन्दिर के दो भाग, गर्भगृह तथा जगमोहन एक साथ और सामने की ओर हटकर नाट मण्डप का निर्माण किया गया था। सूर्य के सप्ताश्वरथ की वैदिक अवधारणा को सर्वप्रथम गुप्तकाल में मूर्त रूप दिया गया किन्तु सम्पूर्ण सूर्य मन्दिर को रथ के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय उड़ीसा के शिल्पी को ही है, जिसने कोणार्क में सूर्य के रथ देउल (मन्दिर) का निर्माण किया। मुख्य मन्दिर के सामने का भाग अर्थात जगमोहन 100 फीट वर्ग का है। गर्भगृह का शिखर ध्वस्त हो गया है, जिसकी मूल उंचाई लगभग 225 फीट रही होगी। वयचकड नामक प्राप्त बही के अनुसार इस मन्दिर के निर्माण के लिए देश के कोने–कोने से कई सहस्त्र शिल्पियों को आमंत्रित किया गया था तथा सम्पूर्ण शिल्पीय कार्य के अधिष्ठाता के रू॰ में सदाशिव सामंतराय महापात्र नामक प्रसिद्ध स्थपति को सूत्रधार नियुक्त किया गया था। उसी ने इस मन्दिर के गर्भगृह में स्थापित महाभास्कर (सूर्य) प्रतिमा का निर्माण किया था।[36]

इस प्रकार भविष्यपुराण के उपर्युक्त संदर्भों से यह स्पष्ट होता है कि सूर्य मन्दिर निर्माण हेतु स्थान परीक्षण के साथ–साथ उपयुक्त दिशाओं का चयन भी अत्यन्त आवश्यक था जिससे भगवान सूर्य और उनके मन्दिर के प्रति श्रद्धालुओं की आस्था निरंतर बनी रहे, और यह भी स्पष्ट होता है कि उड़ीसा स्थित कोणार्क का सूर्य मन्दिर उत्तर भारत के नागर शैली के मन्दिरों में सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं भव्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. चर्तुवेदी, श्रीनारायण–सूर्योपासना और ग्वालियर का विवस्वान मन्दिर, पृ.23

Received: 10.02.2023 **Accepted:** 16.03.2023 **Published**: 16.03.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.06.01.46
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

2. अवस्थी, रामाश्रय– खजुराहो की देव प्रतिमाएं, पृ. 163–164
3. उपर्युक्त– पृ. 164
4. उपर्युक्त
5. श्रीवास्तव, वी.सी.– सन् वर्शिप इन एन्शेन्ट इन्डिया, पृ. 376–377
6. भविष्य महापुराणम् (अनु. पं. बाबूराम उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग) – 1/130/8
7. उपर्युक्त– 1/130/10
8. उपर्युक्त– 1/130/17
9. उपर्युक्त– 1/130/18
10. उपर्युक्त– 1/130/19
11. उपर्युक्त– 1/130/26क
12. उपर्युक्त– 1/130/23ख–35
13. उपर्युक्त– 1/130/63ख
14. उपर्युक्त– 1/130/32ख
15. उपर्युक्त– 1/130/34
16. उपर्युक्त– 1/130/41–42क
17. उपर्युक्त– 1/130/42ख–43
18. उपर्युक्त– 1/130/44
19. उपर्युक्त– 1/130/48
20. उपर्युक्त– 1/130/49
21. उपर्युक्त– 1/130/50क
22. उपर्युक्त– 1/130/51
23. उपर्युक्त– 1/130/52–53क
24. उपर्युक्त– 1/130/53ख–54
25. उपर्युक्त– 1/130/55
26. उपर्युक्त– 1/130/57
27. उपर्युक्त– 1/130/59–60
28. उपर्युक्त– 1/130/62ख
29. उपर्युक्त– 1/130/62क

Received: 10.02.2023 **Accepted:** 16.03.2023 **Published**: 16.03.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.06.01.46
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

30. उपर्युक्त– 1/130/6

31. श्रीनारायण चतुर्वेदी–सूर्योपासना और ग्वालियर का विवस्वान मन्दिर,पृ0 35

32. ब्रम्हपुराण– अध्याय, 7/28

33. उमियाशंकर व्यास– भारत में सूर्य पूजा और सूर्य मन्दिर, (कल्याण सूर्यांक,वर्ष 53, सं0 1)

34. आर.सी. हाजरा– स्टडीज इन द उपपुराणाज, पृ0 106

35. श्रीनारायण चतुर्वेदी– उपर्युक्त, पृ0 44

36. उदय नारायण राय– उपर्युक्त, पृ0 237

Received: 10.02.2023 **Accepted:** 16.03.2023 **Published**: 16.03.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.